13

अहज्याह

परमेश्वर का अपमान करना

वचन पाठ: 1 राआओं 22:51-53; 2 राजाओं 1

लगभग दो साल पहले की बात है। एक मसीही स्त्री, जिसे मैं और मेरी पत्नी वर्षों से जानते हैं, का एक खतरनाक एक्सीडेंट हुआ, जिससे उसे paraplegic (शरीर के निचले भाग में लकवा) हो गया। कन्धों से नीचे लकवे से पीड़ित अब उस स्त्री का घर व्हील चेयर बन गया है, जिसे वह अपने दांतों से चलाती है। उसके पति ने कलीसिया में एल्डर में रूप में बड़े विश्वास के साथ सेवा की थी; उसके बच्चे समझदार और आज्ञाकारी थे। यह मानने का उसके पास हर कारण था कि उसे अपने परिवार के साथ खुशहाली से रहने के लिए कई और साल मिलने चाहिए थे। परन्तु उसका और परिवार के लोगों का जीवन एक ही दिन में नाटकीय ढंग से बदल गया था।

जब हमें विपत्ति के क्रूर हाथ द्वारा एक कोने में धकेल दिया जाता है तो हमें जीवन के बारे में और इससे भी बढ़कर अपने बारे में जानने को मिलता है। क्या आपको कभी ऐसी त्रासदी का सामना करना पड़ा है, जिससे जीवन फिर से नये सिरे से आरम्भ करना पड़ा हो। यदि नहीं तो ऐसी परीक्षा की कल्पना की कोशिश करें।

मान लें कि एक खतरनाक बीमारी आपको लग जाती है। आपको इस की उम्मीद नहीं थी और निश्चय ही आपकी इच्छा भी नहीं। आपने अपने जीवन की योजना बना रखी थी। आपको भविष्य दिखाई दे रहा था और आपको मालूम था किआप क्या करने वाले हो। फिर आसमान से, विपत्ति का एक बड़ा ट्रक आपके जीवन पर चढ़ जाता है। आप कुचल दिए जाते हैं, पीठ के बल पीछे को गिर जाते हैं। आपको अपनी सब योजनाएं खिड़की में से बाहर फैंकनी पड़ती हैं। अचानक एक दुष्प्रचार से जीवन में आपकी उन्नति खाक हो जाती है। अपनी बनाई हर योजना आपको कूड़े में फैंक कर जीवन नए सिरे से आरम्भ करना पड़ता है। आपके पास कुछ नहीं बचा है, न भविष्य की उम्मीद है। पहली बार आपको अहसास होता है कि आप परमेश्वर के हाथ में हैं।

आप क्या करते हैं? ऐसे अनुभव से आप क्या सबक लेते हैं? यहां से आप कहां जाते हैं?

पहले तो आप जीवन को बिल्कुल ही नये नज़रिये से देखते हैं, जैसे शायद आपने पहले कभी नहीं देखा, कभी न पूरी होने वाली हानि का सामना करते हुए। आंखों में अनन्तकाल को देखकर आपको जीवन का मूल्यांकन करने और इसे सही ढंग से जीने में सहायता मिलती है। जीवन की झालरें, जिन्हें बहुत से लोग पाने को दौड़ते हैं, ऐसे कठिन हालात में तस्वीर में कहीं नहीं आतीं। उन पर ध्यान नहीं दिया जाता। वे ध्यान देने योग्य भी नहीं हैं। आपका ध्यान जीवन की आशिषों और चुनौतियों पर अधिक केन्द्रित होता है, जिसमें परमेश्वर, परिवार, स्वास्थ्य, बढ़ना, सेवा करना और परमेश्वर से मिलने को तैयार रहने का महत्व अधिक है।

दूसरे, आप जीवन को अधिक साफ़ यानी इसके असली महत्व, इसके असली उद्देश्य और परमेश्वर के साथ इसके सम्बन्ध को देखते हैं। शायद आपके मन में कई गम्भीर निर्णय आते हैं। आप ''हे परमेश्वर, यदि मुझे ठीक कर दे तो आगे से मैं हर बात में तुझे पहल दूंगा'' जैसी प्रतिज्ञा कर सकते हैं। हो सकता है कि आप को समझ आ जाए कि आपको कितने धन्यवादी होना चाहिए था। आपका जीवन कितना अधिक पवित्र होना चाहिए था।

तीसरा, आप उससे, जो आपके जीवन में बचा है, नये सिरे से आरम्भ करते हैं। यदि आपकी सोच सही है, तो आप परमेश्वर के साथ आरम्भ करते हैं। प्रार्थना आपके लिए आम बात बन जाती है। आप प्रार्थना करने में ढील नहीं करते और यह आपके जीवन की विशेषता बन जाती है। फिर आप दूसरी महत्वपूर्ण बातों की ओर आते हैं। सम्भव होने पर आप अपने शरीर पर ध्यान देने लगते हैं; अपने परिवार में अपनी नई जगह ढूंढ़ते हैं; कलीसिया के सदस्य के रूप में सेवा के लिए अपनी जगह की तलाश करते हैं; और नई शुरुआत करते हुए समाज में अपनी जगह तलाश करते हैं।

खतरनाक अनुभव हमें अन्दर तक हिला सकते हैं और हमारे अन्दर जीवन को सही ढंग से पाने की इच्छा पैदा कर सकते हैं। वे हमें मिलने के उस भीतरी स्थान तक नीचे ले आते हैं, जहां हम अकेले में परमेश्वर से बात कर सकते हैं। जब सब कुछ और कोई भी छोड़ दे तो केवल परमेश्वर और हम रह जाते हैं।

हमें लग सकता है कि अनन्तकाल के किनारे तक ऐसे सफ़र से किसी को भी जीवन के सही पक्ष की समझ आ जानी चाहिए, परन्तु ऐसा होता नहीं। हमें हैरानी होगी कि कुछ लोग जीवन द्वारा लताड़े जाकर, फिर से उसी दुष्टता में वापस आ जाते हैं, जैसे मौत को नज़दीक से देखने के बावजूद उन्होंने कोई सबक न लिया हो।

विपत्ति से कुछ न सीखना, विशेषकर इस्राएल के आठवें राजा अहज्याह की विशेषता थी। राजा के रूप में उत्तराधिकारी बनने वाला वह अहाब के दो पुत्रों में से एक था। उसने अपना शासन यहूदा में यहोशापात के सत्रहवें वर्ष में आरम्भ किया। वह 853 से 852 ई.पू. तक दो वर्षों के केवल कुछ भाग अर्थात बहुत थोड़ी देर के लिए गद्दी पर बैठा।

यह राजा जिस बात के लिए प्रसिद्ध था, वह उसका पाप था। बाइबल का वचन उसकी एक भी अच्छी बात का उल्लेख नहीं करता:

> और उस ने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था। और उसकी चाल उसके माता पिता, और नबात के पुत्र यारोबाम की सी थी जिस ने इस्राएल से पाप करवाया था (22:52)।

पवित्र आत्मा अहज्याह की दुष्टता का वर्णन तीन चरणों में करता है। पहले हमें बताया गया है कि ''उसकी चाल उसके पिता'' की सी थी। इसका अर्थ सम्भवतया यह है कि उसने यहोवा की आराधना की उपेक्षा की, बाल की पूजा की अनुमति दी, कठोरता और क्रूरता से शासन किया और नबियों के सताव की अनुमति दी। अहाब में ये विशेषताएं थीं, और अहज्याह उसी के रास्ते पर चला।

दूसरा, ''उसकी चाल अपनी माता'' की सी थी। वह दुष्ट माता का कमज़ोर पुत्र था। उसकी

मां ने उसे अपने धर्म को मानने वाला बना लिया। उसने बाल की सेवा और उसकी पूजा करके अपनी मां की इच्छा को जीवित रखा। इस प्रकार उसने इस्राएल में फीनीके के ऐयाश सम्प्रदाय को बरकरार रखा, जो सबसे अधिक नैतिक पतन करने वाले और हीन बनाने वाले धर्मों में से एक था।

तीसरा, दान और बेतेल में बछड़े की पूजा बरकरार रखकर वह ''यारोबाम की सी'' चाल चला (1 राजाओं 22:52)। यारोबाम की चाल चलना ही कम बुरा नहीं था, परन्तु पाप से भरे दो अन्य आदर्शों को मानने ने अहज्याह और भी दुष्ट बना दिया। दुष्टता के एक से दस तक के माप पर अहज्याह नौ या दस पर होगा यानी वह दुष्टों में दुष्ट था।

बाल का भक्त, वह भी अपने पिता अहाब से दुष्टता में आगे बढ़ गया। एलिय्याह के साथ मुकाबला करने से उसे अपने पिता से धार्मिकता का सबक मिलना चाहिए था, पर उसने नहीं लिया। वह दृढ़ निर्लज्ज, तन-मन से मूर्तिपूजक था। उसके लिए यहोवा, कुछ नहीं था; बाल ही उसका देवता था। वह सबके सामने बाल के प्रति अपनी श्रद्धा दिखाता था। उसने परमेश्वर की चेतावनियों को तुच्छ जाना और परमेश्वर की इच्छा न मानने पर इतराता था।

अहज्याह के गद्दी पर बैठने के तुरन्त बाद, तबाही आ पड़ी। हमें हैरानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि पाप एक टाइम बम है, जो अन्त में फट ही जाएगा। पाप करने वाला वास्तव में कभी विजयी नहीं होता। अपने पाप के कारण अहज्याह को राजनैतिक और निजी दोनों तरह से परेशानियों का सामना करना पड़ा।

उसकी राजनैतिक हानियों में से दो का उल्लेख बाइबल में है। यहोशापात के साथ मिलकर जहाज़ बनाने के अहाज के उद्यम को परमेश्वर ने एस्योन गेबेर में नष्ट कर दिया (2 इतिहास 20:37)। अहाब के मरने के बाद, मोआबियों ने इस्राएल को ऊन कर के रूप में बड़ा धन देना बंद कर दिया (2 राजाओं 1:1; 3:4)। ओम्री ने मोआबियों पर विजय पा ली थी और उनसे इस्राएल के लिए कर लेता था। अपने शासन के दौरान अहाब ने मोआब की इस अधीनता को बनाए रखा था। युद्ध के मैदान में अहाब के मारे जाने पर मोआबियों ने विद्रोह कर दिया। स्पष्टतया इस्राएल के हाकिम की मृत्यु से मोआब के राजा मेशा को दिलेरी मिली; उसने इस्राएल की ''चालीस साल'' पुरानी अधीनता पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया। मोआबी पत्थर से मेशा के अपने ही शब्दों में उसके विद्रोह का पता चलता है।[1] पुराने नियम के समयों में अधीन लोगों द्वारा आमतौर पर शक्तिशाली सम्राट की मृत्यु को अपने दमनकारी से पीछा छुड़ाने का संकेत माना जाता था। उनका मानना था कि हो सकता है कि नये राजा में पहले वाले राजा जैसी शक्ति और क्षमता न हो, जिस कारण वे देश की अगुआई करने की नये राजा की कमज़ोरी और अनुभव की कमी की आशा से विद्रोह के लिए इस समय को चुनते थे। अहाब के मरने के बाद मोआब में यही हुआ होगा। मेशा ने दमन को उतार फैंका और अहज्याह और इस्राएल को इससे बड़ी हानि हुई।

अहज्याह के लिए एक और बड़ी हानि हुई, जो उसकी निजी हानि थी। वह अपने महल की ऊपरी खिड़की से गिर गया और बुरी तरह घायल हो गया। इतिहासकार जोसेफस ने कहा है कि वह जाली से ऊपरी खिड़की से नीचे को आ रहा था और किसी तरह गिर गया।[2] उसका घाव इतना गहरा था कि वह अपने बिस्तर से उठ नहीं सकता था।

हमें लग सकता है कि इन बड़ी हानियों अर्थात जहाज़ बनाने में उसकी असफलता, मोआब के सफल विद्रोह और अहज्याह के शारीरिक घाव और पीड़ा से बिस्तर पर पड़ जाने से राजा ने

पश्चाताप किया होगा। यह पढ़कर कि उस पर किस प्रकार विपत्ति आई, हम निष्कर्ष निकालते हैं, ''हो सकता है कि अब अहज्याह परमेश्वर की ओर मुड़ आए। निश्चय ही वह अपने जीवन का फिर से मूल्यांकन करेगा और सही प्राथमिकताओं के साथ नई शुरुआत करेगा।'' लेकिन ऐसा नहीं हुआ! परमेश्वर की ओर लौटने के बजाय उसने परमेश्वर का अपमान किया! उसने निडर होकर प्रमुखता से परमेश्वर का अनादर किया।

परमेश्वर का अपमान करने का अहज्याह का ढंग अपने जीवन के अन्त के निकट ही नहीं था, उसने अपने जीवन के अधिकतर वर्षों में ऐसा ही किया था। आइए देखते हैं कि उसने यह कैसे किया ताकि मैं और आप इस बात को सुनिश्चित कर सकें कि हम ऐसा करने का सोचेंगे भी नहीं!

परमेश्वर की उपेक्षा करके

पहले तो अहज्याह ने परमेश्वर की उपेक्षा करके उसे अपमानित किया। मूर्तिपूजा के प्रचारकों, अहाब और ईज़ेबल का पुत्र होने के बावजूद अहज्याह के पास यहोवा को सच्चा परमेश्वर मानने के कई अवसर होंगे। एलिय्याह द्वारा बिना किसी संदेह के परमेश्वर की सच्चाई और बाल के झूठ को दिखाने के समय वह कर्मेल पहाड़ पर ही होगा (1 राजाओं 18)। वह वहां न भी हो तौ भी उसने सब सुना होगा कि वहां क्या-क्या हुआ था। उसके सामने परमेश्वर की वास्तविकता का प्रमाण लाया गया था। उसे सच्चाई दिखाई गई थी। किसी कारण हो सकता है कि ईज़ेबेल और अहाब के दबाव में उसने इस प्रमाण की ओर कोई ध्यान न दिया और बाल की पूजा करने में लगा रहा। संसार की सबसे बड़ी सच्चाई अर्थात परमेश्वर को किसी के नज़रअंदाज़ करने कि जैसे वह वहां हो ही न, परिणामों पर विचार करें!

बाइबल में अहज्याह की तस्वीर पहली बार दिखाने पर उसे एक दुष्ट व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है। बेशक इस समय वह परमेश्वर की उपेक्षा अपने ही ढंग से कर रहा था। यहूदा के राजा यहोशापात के साथ जहाज़ बनाने के उद्यम का विचार करने पर जहां तक बाइबल संकेत देती है, उसने यह विचार परमेश्वर के बारे में एक के विचार बिना सारे प्रयास किए। उसने परमेश्वर के बिना जीवन बिताया और काम किया।

> इसके बाद यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल के राजा अहज्याह से, जो बड़ी दुष्टता करता था, मेल किया। अर्थात उसने उसके साथ इसलिए मेल किया कि तर्शीश जाने को जहाज़ बनवाए, और उन्हों ने ऐसे जहाज़ एस्योन गेबेर में बनवाए। तब दोदावाह के पुत्र मारेशावासी एलीआजर ने यहोशापात के विरुद्ध यह नबूवत कही कि तू ने जो अहज्याह से मेल किया, इस कारण यहोवा तेरी बनवाई हुई वस्तुओं को तोड़ डालेगा। सो जहाज़ टूट गए और तर्शीश को न जा सके (2 इतिहास 20:35-37)।

यहोशापात की स्थिति उससे बेहतर थी, और उसे अहज्याह के साथ भीगीदारी करने से पहले मालूम था कि क्या होने वाला है। परमेश्वर ने एलीआजर को उसे यह बताने के लिए भेजा कि निर्माण का उसका कार्यक्रम सफल नहीं होगा, क्योंकि उसने एक दुष्ट व्यक्ति अहज्याह के साथ मेल किया है। याद रखें कि यहोशापात ही था, जिसने इस बात पर ज़ोर दिया था कि किसी सच्चे नबी को यह बताने के लिए लाया जाए कि गिलाद रामोत पर अश्शूरियों से इस्राएल की लड़ाई में

क्या-क्या होगा (22:7)। हम जानते हैं कि यहोशापात ने परमेश्वर की इस चेतावनी की अनदेखी की और यह कि अहज्याह बिना परमेश्वर के जीता रहा, यहोशापात ने चेतावनी को नज़रअंदाज़ किया, जबकि अहज्याह परमेश्वर का अपमान करते हुए अड़ा रहा।

1 राजाओं का विवरण यह संकेत देता है कि यहोशापात ने जहाज़ भेजने का दूसरा प्रयास किया। अहज्याह ने उससे सहायता मांगी, परन्तु यहोशापात ने इनकार कर दिया। स्पष्टतया यहोशापात ने जहाज़ बनाने में अपनी असफलता और परमेश्वर से मिले संदेश से सबक लिया, परन्तु अहज्याह ने नहीं।

> उस समय एदोम में कोई राजा न था; एक नायब राजकाज का काम करता था। फिर यहोशापात ने तर्शीश के जहाज़ सोना लाने के लिए ओपीर जाने को बनवा लिए, परन्तु वे एस्योन गेबेर में टूट गए, इसलिए वहां न जा सके। तब अहाब के पुत्र अहज्याह ने यहोशापात से कहा, मेरे जहाज़ियों को अपने जहाज़ियों के संग, जहाज़ों में जाने दे, परन्तु यहोशापात ने इनकार किया (22:47-49)।

यहोशापात ने तो परमेश्वर की आज्ञा न मानने का परिणाम देखकर पश्चाताप किया, परन्तु यह स्पष्ट है कि अहज्याह ने पश्चाताप नहीं किया। अहज्याह एक दुष्ट व्यक्ति था और उसका जीवन ऐसा था, जैसे यहोवा का अस्तित्व ही न हो। उसने पूरी तरह से परमेश्वर को नज़रअंदाज़ कर दिया।

एक आदमी की कहानी बताई जाती है, जिसके पास एक सुन्दर फार्म था, जिसमें वह अच्छा जीवन बिता रहा था। उसके पास सब कुछ था। परमेश्वर ने उसे एक सुन्दर पत्नी और तीन प्यारे-प्यारे बच्चे दिए थे। उसकी पत्नी और बच्चे मसीही बन गए, परन्तु वह नहीं बना था। नज़दीक का एक प्रचारक उसे सुसमाचार बताने की कोशिश करता था, परन्तु लगता था कि कोई लाभ नहीं होगा। एक दिन मसीही बनने के विषय पर प्रचारक से बातचीत के बाद उस आदमी ने कन्धे उचकाते हुए कहा, ''मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।'' उसकी बात से निराश प्रचारक ने कहा, ''आपका मतलब है कि आप स्वर्ग में नहीं जाना चाहते?'' आदमी ने उत्तर दिया, ''बिल्कुल सही कहा। मैं नहीं जाना चाहता।'' अवाक प्रचारक ने पूछा, ''आपका मतलब है कि आप नरक में जाना चाहते हैं?'' उस आदमी ने कहा, ''नहीं, मैं नरक में नहीं जाना चाहता।'' प्रचारक को थोड़ी उम्मीद जगी और वह कहने लगा, ''मैं समझा नहीं। आप स्वर्ग में नहीं जाना चाहते। नरक में भी नहीं जाना चाहते। तो फिर कहां जाना चाहते हैं? कहीं तो जाना पड़ेगा।'' आदमी ने उत्तर दिया, ''मैं कहीं नहीं जाना चाहता! मैं यहीं अपने खेत में रह कर आराम से रहना चाहता हूं और अपना कारोबार देखना चाहता हूं।''

अफसोस की बात है कि उसका यह उत्तर वास्तव में बहुत से लोगों का निष्कर्ष है: उसने परमेश्वर को नीचा दिखाना अर्थात ऐसे जीवन बिताना चुना था कि जैसे परमेश्वर आस-पास कहीं हो ही न। वह परमेश्वर की भूमि पर रहना, उसकी हवा में सांस लेना, उसका पानी पीना और उसके द्वारा दिए परिवार में आनन्द तो करना चाहता था पर यह बहाना बनाकर कि उसका सृष्टिकर्त्ता और सहायक हवा में कहीं खत्म हो गया था, परमेश्वर को नज़रअंदाज़ करना चाहता था!

क्या आपके लिए यह अपमान की बात नहीं होगी कि आपके होते हुए लोग आपको नज़रअंदाज़ करें ? आवश्यक नहीं कि आप मुख्य आकर्षण बनना चाहते हों, परन्तु कम से कम यह इच्छा तो रहती है कि आपको जीवित व्यक्ति के रूप में माना जाए।

बर्फीले समुद्र में *टाइटेनिक* के डूबने से पहले चेतावनियां भेजी गई थीं; पर किसी कारण उन चेतावनियों की अनदेखी कर दी गई। उन चेतावनियों में विस्तार से बताया गया था कि यदि उन पर ध्यान दिया जाए तो जहाज़ को विनाश से कैसे बचाया जा सकता है, परन्तु जीवन और मृत्यु के उन संकेतों को महत्वहीन और अप्रासंगिक माना गया। थोड़ी ही देर में बर्फ की चट्टान से टकरा कर *टाइटेनिक* बीच में से टूट गया और कई लोग समुद्र की तह में समा गए।

हम में से अधिकतर लोगों को पता है कि उपेक्षा होने का क्या अर्थ है। हो सकता है कि आपके पास कुछ ऐसी जानकारी हो, जो आपके आस-पास रहने वालों के लिए महत्वपूर्ण हो; परन्तु क्योंकि वे जल्दी में थे या उसे सुनना नहीं चाहते थे, जिस कारण उन्होंने आपकी बात पर ध्यान नहीं दिया। आप इस पर विश्वास नहीं कर पाए। आप उनकी सहायता करके उनके जीवन को आसान कैसे बना सकते थे! ऐसा व्यवहार होने पर हम कुछ हद तक कल्पना कर सकते हैं कि उपेक्षा किए जाने पर परमेश्वर को कैसा लगता है।

परमेश्वर ही एक सच्चाई है, अर्थात वही एक व्यक्ति है, जिसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। वह सबसे बड़ी सच्चाई है। केवल वही और वही जीवित परमेश्वर है और यही सत्य है; परन्तु लोग आमतौर पर उस सच्चाई की उपेक्षा ऐसे करते हैं, जैसे उस पर ध्यान देना व्यर्थ हो। कितने दु:ख की बात है! इससे उन्हें क्या परेशानी होती है और परमेश्वर को कितनी परेशानी होती है! परमेश्वर संसार का और मनुष्य का सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्त्ता है। वह हमें जीवन का हर पल देता है। उसकी आशिषों और उसके अनुग्रह के बिना हम एक उंगली भी नहीं हिला सकते। उसकी उपेक्षा करना और इस प्रकार का जीवन जीना, जैसे वह हो ही न, परमेश्वर के लिए बहुत बड़ा अपमान है।

परमेश्वर का इनकार करके

दूसरा, अहज्याह ने परमेश्वर का इनकार करके उसका अपमान किया। उसने उसे केवल ऐसे ही नहीं देखा, जैसे वह हो ही न, बल्कि वह इससे भी आगे बढ़कर जान-बूझकर उसने उसे ठुकराया और अपने मन में से निकाल दिया। मूर्तिपूजा में जाने का सफ़र आमतौर पर परमेश्वर को न जानने से आरम्भ होता है। फिर परमेश्वर का इनकार करने की ओर बढ़ते हुए अन्त में परमेश्वर की जगह किसी और को देने पर खत्म होता है। पहले दो चरणों का क्रम कई बार उलटा हो सकता है, परन्तु अन्तिम परिणाम परमेश्वर का विकल्प मान लेना ही रहता है।

गिरने से घायल होने के बाद अहज्याह ने अपना भविष्य जानने के लिए यहोवा के पास नहीं, बल्कि एक्रोन के देवता बालजबूब के मन्दिर में पूछने के लिए फिलिस्तिया (पश्चिम की ओर लगभग चालीस मील) में दूत भेजे (2 राजाओं 1:2)।[3] इन कार्यों से पता चलता है कि अहज्याह ईज़ेबेल की असली सन्तान अर्थात बाल का पुजारी और पक्का मूर्तिपूजक था।

वास्तव में लगता है कि ईश्वरीय पुस्तक में अहज्याह को कोई जगह दिए जाने का प्रमुख कारण यह है कि उसने उसे हुए घाव के विषय में मूर्ति के इस देवता से सलाह मांगी। हमें असली

अहज्याह को देखने दिया जाता है, जिसमें उसने अपनी पीड़ा और अपने भविष्य का कुछ करने का निर्णय लिया। उसके असली रंग दिखाई दे रहे थे; उसके मन की बातें बाहर आ गई थीं। पवित्र आत्मा हमें दिखाता है कि अहज्याह वह राजा था, जो परमेश्वर से दूर हो गया था।

राजा के भविष्य के बारे में पूछने के लिए निकले मुट्ठी भर दूतों की मुलाकात एलिय्याह से हो गई (2 राजाओं 1:3, 4)। उसे इन दूतों को रोकने और उन्हें यह बताने के लिए कि अहज्याह ने बालजबूब से पूछा है, इसलिए वह मर जाएगा, परमेश्वर की ओर से भेजा गया था। परमेश्वर ने अपनी महिमा को बाहर ले जाने के लिए अहज्याह के अपमान की अनुमति नहीं देनी थी।

एलिय्याह ने उन्हें यह पूछते हुए रोका कि ''क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं, जो तुम एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने जाते हो?'' (2 राजाओं 1:3ख)। इब्रानी वाक्यांश में दोहरे नकारात्मक का इस्तेमाल किया गया है, जो इसके अर्थ को गहरा कर देता है। बालजबूब को राजा का संरक्षण और यहोवा के अस्तित्व को पूरी तरह से नकारना था। अहज्याह के लिए किसी बाहरी आकाशवाणी को सुनने का अर्थ यह कहने जैसा था कि जहां तक उसकी बात थी, परमेश्वर उसके साथ बिल्कुल बात नहीं करता था। राजा यह घोषणा कर रहा था कि उसके देश में परमेश्वर का अस्तित्व नहीं है। इन दूतों को भेजकर अहज्याह की तरह सोचना ही व्यक्ति के मन पर उदासी की लहर ले आता है।

जेम्स बर्टन कॉफमैन ने एक घटना बताई है, जो कई साल पहले ओक्लाहोमा के एक छोटे से नगर में उनके एक प्रार्थना सभा करने के दौरान घटी थी। उन्हें एक आदमी के पास जाने को कहा गया, जो उस समाज में कई वर्षों से रह रहा था, और मसीही नहीं था। वह उससे मिलने गए। यह कहने पर कि वह मसीही बनने के बारे में बात करने आए हैं, उस आदमी ने उनसे कहा, ''यदि मसीह स्वयं मेरे सामने खड़ा हो जाए और मसीहियत के दावे करे तो मैं उसकी बात के कारण उसे भी नकार देता।'' भाई कॉफमैन ने जल्दी से बातचीत खत्म की और वहां से चल दिए। उस आदमी ने यीशु की ही उपेक्षा नहीं की थी। उसने मसीहियत को ठुकराया था। ऐसे आदमी के साथ बात जारी क्यों रखी जाए, जिसने पहले से सोच रखा है कि वह सच्चाई को नहीं मानेगा।

अहज्याह ने परमेश्वर की उपेक्षा करके अपने पतन का आरम्भ कर दिया, परन्तु ईज़ेबल के प्रभाव में अन्त में उसने परमेश्वर को ठुकराना चुना। जब उसे सहायता की आवश्यकता थी तो वह उस देवता के पास अर्थात बालजबूब के पास गया, जिसे उसने चुना था। उसके काम परमेश्वर का घोर अपमान थे!

परमेश्वर का स्थान किसी और को देकर

तीसरा ढंग जिससे अहज्याह ने परमेश्वर का अपमान किया, वह बाल को परमेश्वर की जगह देना था। परमेश्वर को ठुकराने के अहज्याह के निर्णय से तुरन्त परमेश्वर की जगह मूर्तियों के देवताओं ने ले ली। हो सकता है कि ठुकराया जाना और दूसरे को जगह देना एक ही समय में हुआ हो यानी यह दो नहीं, बल्कि एक ही निर्णय हो। परन्तु ऐसा हुआ, अहज्याह बाल की ओर इतना झुक गया था कि वास्तव में उसे लगा कि वह यहोवा के किसी हस्तक्षेप के बिना एलिय्याह को पकड़कर उसे मार सकता है!

जब दूत एलिय्याह का संदेश लेकर उसके पास लौट आए तो अहज्याह ने जानना चाहा कि

वे इतनी जल्दी कैसे लौट आए? उन्होंने उसे बताया कि उन्हें एक आदमी मिल गया, जिसने उन्हें यह संदेश देकर भेज दिया कि अहज्याह मर जाएगा। अहज्याह ने तुरन्त पूछा कि वह आदमी दिखने में कैसा था ताकि उसकी पहचान हो सके। एलिय्याह का विवरण जानवर की रोएंदार चमड़ी पहने, व्यक्ति के रूप में किया गया।[4] अहज्याह को पता चल गया कि वह एलिय्याह था।

फिर अहज्याह ने एक अनोखी बात की। उसने एलिय्याह को पकड़ने के लिए सिपाही भेजे। हमारे लिए यह मान लेना तर्कसंगत है कि उसने एलिय्याह को पकड़ने और मार डालने का निर्णय लिया था। हम देख सकते हैं कि अहज्याह ने यहोवा को शक्तिहीन, निकम्मे देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि बाल को उससे बड़ा मान लिया था। उसे लगा कि वह परमेश्वर के सेवक के साथ कुछ भी कर सकता है। वह यहां तक अन्धा हो गया कि उसे समझ नहीं आई कि बाल के पास कोई शक्ति नहीं थी जबकि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। वास्तव में उसने यहोवा को एलिय्याह को उसे पकड़ने से रोकने के अयोग्य समझा था!

सिपाहियों को मालूम था कि एलिय्याह परमेश्वर का सच्चा नबी है और उन्हें उस पवित्र जन को मार डालने के लिए अहज्याह के पास लाने को भेजा गया है। उन्हें मालूम था कि परमेश्वर इस्राएल में सर्वोच्च राजा है और एलिय्याह उसकी इच्छा के अनुसार कर रहा है। इसलिए एलिय्याह को पकड़ने और उसे अहाब के पास लाने की इच्छा करने पर वे बिल्कुल दुष्ट काम में अर्थात परमेश्वर से विद्रोह करने और जो सबसे बड़ा है, उससे बग़ावत कर रहे थे। दुष्ट अहज्याह के आदेशों का पालन करने की उनकी सहमति परमेश्वर की आज्ञा तोड़ना था।

इन सिपाहियों को क्या करना चाहिए था? इस पर कोई बहस नहीं हो सकती। उन्हें उसकी आज्ञा मानने से इनकार कर देना चाहिए था। अधिकारी हो या सिपाही पहले सब परमेश्वर की आज्ञाओं के अधीन हैं और यदि उनके अगुवे और उन्हें आज्ञा देने वाले परमेश्वर की नज़र में पापी हैं, तो वे उनकी आज्ञा मानने को कभी उचित नहीं ठहरा सकते (प्रेरितों 5:29)।

इस दृश्य की कल्पना करें: राजा के दूतों को रास्ते में एक आदमी की परमेश्वर की शक्तिशाली सेना अर्थात गर्मी से झुलसे नबी द्वारा रोका गया, जिसके पास एक लाठी, और चमड़े की रोएंदार पेटी के अलावा और कुछ नहीं था। इकयावन सुप्रशिक्षित सिपाही उसके विरुद्ध खड़े हुए थे। यह मुकाबला बराबर का नहीं था।

एलिय्याह ने प्रार्थना की तो ऊपर से आग गिरी और वे भस्म हो गए। जोसेफस ने कहा है कि आग का एक बवंडर आया, और उन्हें खा गया।[5] उन सिपाहियों के सामने जो मुड़कर भाग गए, लड़ाई खत्म हो गई। पच्चास सिपाहियों की एक और टुकड़ी भेजी गई और उन्हें आंख झपकने के समय में भस्म कर दिया गया। अहज्याह ने पाया कि कर्मेल पहाड़ पर गिरी आग बैलों के साथ सिपाहियों को भी भस्म कर सकती थी।

यहां एक बात ध्यान देने वाली है: अहज्याह की क्रूरता को देखें। उसके मन की कठोरता उसकी मां के जैसी थी, जो एलिय्याह के विरुद्ध पच्चास लोगों की दूसरी और फिर तीसरी टुकड़ी भेजने में देखी जाती है। उसने जानते हुए अपने सिपाहियों को उस नबी की बात मानने और अपनी गलती मानने के बजाय उन्हें मरने भेज दिया। *तुलनात्मक रूप* से अपने पिता से कम आयु में वह उससे अधिक नैतिक बुराई में और अधिक नीचे चला गया।

एलिय्याह की भूमिका पर भी ध्यान दें। उसे परमेश्वर का आदर, मूर्तिपूजा को देखकर उसे

दण्ड देने, इस्राएल के शेष विश्वासियों को जीवित रखने का निर्णय सुनाने के लिए भेजा गया था। फिर जब परमेश्वर के सच्चे धर्म को नष्ट करने और उसे मिटाने के लिए पृथ्वी की सारी शक्तियां इकट्ठी हो गईं तो उसे परमेश्वर के न्याय के रूप में भेजा गया। कर्मेल पर पहले ही उसने बाल के नबियों पर ईश्वरीय न्याय सुना दिया था। अब दुष्ट ईज़ेबेल के पुत्र अहज्याह ने यहोवा के नबी को पकड़ने और उसे मार डालने के लिए सिपाहियों की टुकड़ी भेजकर उसकी शक्ति को ललकारा था।

क्या एलिय्याह ने बिना प्रयास के उनके सामने हथियार डाल देने थे या यहोवा का सेवक बनना था? कोई भलाई करने या किसी को कोई हानि पहुंचाने की उसमें अपने आप में कोई शक्ति नहीं थी। वह तो केवल यहोवा से प्रार्थना कर सकता था और अपनी बुद्धि और सम्पूर्ण भलाई में यहोवा जैसे चाहे उसकी प्रार्थना को मान भी सकता था और नकार भी सकता था। यदि परमेश्वर उसकी प्रार्थना को मान लेता तो इसका परिणाम एलिय्याह का नहीं, बल्कि परमेश्वर का काम होना था।

तीसरी टुकड़ी भेजी गई, परन्तु इन सिपाहियों ने सुना था कि दूसरी दो टुकड़ियों का क्या हुआ था। उनके कप्तान ने घुटनों के बल होकर दया की भीख मांगी। मिट्टी के देवता बाल को सच्चे परमेश्वर यहोवा द्वारा मिटा दिया गया था। लड़ाई खत्म हो गई थी और परिणाम निर्णायक थे।

परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने प्रकट होकर एलिय्याह को बताया कि उसे क्या करना है (2 राजाओं 1:15)। एलिय्याह ने कोई हिचकिचाहट, भय या अपनी निजी सुरक्षा के लिए अनावश्यक चिन्ता नहीं दिखाई, क्योंकि उसे आश्वस्त किया गया था कि उसे कोई हानि नहीं होगी। वह पहाड़ से नीचे आया और सिपाहियों के साथ अहज्याह के महल में चला गया।

राजा के सामने एलिय्याह ने यह कहते हुए कि वह मरेगा और उस पर कोई दया नहीं दिखाई जाएगी, परमेश्वर का दृढ़ निर्णय सुना दिया।

> और उस से कहा, यहोवा यों कहता है, कि तू ने तो एक्रोन के बालजबूब देवता से पूछने को दूत भेजे थे तो क्या इस्राएल में कोई परमेश्वर नहीं कि जिस से तू पूछ सके? इस कारण तू जिस पलंग पर पड़ा है, उस पर से कभी न उठेगा, परन्तु मर ही जाएगा (2 राजाओं 1:16)।

एलिय्याह ने जितने सरल शब्दों में हो सकता था, राजा को बताया कि उसका अन्त आ चुका है और वह अपने बिस्तर से कभी उठ नहीं पाएगा। उसने एक्रोन के मिट्टी के देवता से सलाह लेकर यहोवा का अपमान किया था, इसलिए उसने अवश्य मरना था।

परमेश्वर की जगह किसी और को देने का विचार उदास करने वाला है। अहज्याह ऐसा करने के लिए अवश्य ही पूरी तरह से बुराई से भरमाया गया होगा।

हम पर परमेश्वर को सिंहासन से उतार कर आज उसकी जगह किसी झूठे देवता को देने का आरोप लग सकता है? हां, सचमुच ऐसा हो सकता है। एक उदाहरण मनुष्य का मानवता के साथ किया जाने वाला काम है। परमेश्वर की सच्चाई को उलट दिया गया है। परमेश्वर के बार-बार आने वाले विचार को नकार कर कूड़े में फैंक दिया गया है जबकि मनुष्य की बुद्धि, शक्ति और

प्राप्तियों को परमेश्वर की जगह मान लिया गया, उसे परमेश्वर बना दिया गया है।

किसी ने कहा है कि पृथ्वी पर जीवन का विषय हमारे संसार में अचानक लाया गया और दिखाया गया है कि हम कैसे रहते हैं, उसे परमेश्वर में हमारे विश्वास का कोई प्रमाण दिखाई नहीं देगा। हमारे टीवी कार्यक्रमों, हमारे राजनैतिक भाषणों और हमारे स्कूल के कार्यक्रमों, हमारे परिवारों के बाहर जाने और हमारी बातचीत को स्कैन करके, उसे परमेश्वर के बारे में कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं देगा। क्या यह सच है? हो सकता है। रुक कर विचार करें। क्या हमने परमेश्वर की जगह किसी और को दे दी है? अहज्याह ने **दी** और उसके परिणाम बड़े खतरनाक थे। हम भी ऐसा कर सकते हैं और उसके परिणाम वही होंगे।

सारांश

अहज्याह को याद करते हुए हम उसके पतन के चरणों अर्थात वह एक रात में बालवाद के धर्म में नहीं आया था, बल्कि वह पूरी श्रद्धा से उसमें लगा रहा। उसे इस कठिन मार्ग का पता चला कि सच्चाई मिथ्या को खत्म कर देती है और परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रभुता एक मज़बूत सच्चाई है जिसे आदमी बदल नहीं सकता, इसलिए उसे उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

अहज्याह न केवल ऊपरी कमरे से गिर कर मर गया, बल्कि उसकी मृत्यु परमेश्वर की ओर से न्याय भी था। अन्तिम समय, जिसमें एलिय्याह को उसने एक आदमी के रूप में देखा, जो सचमुच उसकी सहायता कर सकता था। एलिय्याह अपने कमरे से बाहर निकल गया, जिसमें अहज्याह ने उसे इस जीवन (या अनन्तकाल) में दोबारा कभी नहीं मिलना था। अहज्याह का अवसर आया, परन्तु उसने अपनी आत्मा को भी फैंक दिया।

> यहोवा के इस वचन के अनुसार जो एलिय्याह ने कहा था, वह मर गया। और उसके सन्तान न होने के कारण यहोराम उसके स्थान पर यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में राज्य करने लगा। अहज्याह के और काम जो उस ने किए वह क्या इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में नहीं लिखे हैं? (2 राजाओं 1:17, 18)।

अहज्याह का शारीरिक उत्तराधिकारी होने के लिए उसका कोई शारीरिक पुत्र नहीं था, जिस कारण उसकी गद्दी पर उसका भाई यहोराम बैठा। परन्तु अहज्याह का एक दूसरा सांकेतिक पुत्र था। मन में बार-बार आने वाला अहसास कि मूर्तिपूजा, विलासिता, अनैतिकता, क्रूरता और जादुगरी से केवल शोक, पीड़ा, न्याय मृत्यु ही आती है, संसार के लिए एक भयंकर विरासत है।

किसी ने कहा है, आप परमेश्वर के नियमों को नहीं तोड़ सकते। आप उसके विरुद्ध अपने आप को तोड़ सकते हैं, परन्तु आप उन्हें नहीं तोड़ सकते। तथ्य बहुत ढीठ होते हैं। वे पीछा नहीं छोड़ते। यदि हम उन्हें मान कर अपने जीवन को उन से मिला लें, तो हम उस आनन्द और प्रसन्नता को पा सकते हैं, जो परमेश्वर हमें देना चाहता है। यदि हम उन्हें मानने से इनकार कर दें तो हम उनके विरोध में अपने जीवनों को बर्बाद करेंगे। क्या हम अपने जीवनों को अहज्याह की फिलासफी से चलाएंगे या उसकी गलतियों से सबक लेंगे?

सीखने के लिए सबक:
पाप के साथ कोई जीत नहीं सकता।

टिप्पणियां

[1]मोआबी पत्थर पर मेशा ने कहा, ''ओम्री इस्राएल का राजा था, और उसने मोआब को कई साल तक सताया, क्योंकि केमोश उसके देश से नाराज़ था और उसकी जगह उसका पुत्र राजा बना, उसने भी कहा, 'मैं मोआब को सताऊंगा।' मेरे दिनों में उसने इस प्रकार कहा। परन्तु मैंने उस पर और उसके घराने पर और इस्राएल को अनादि विनाश के साथ नष्ट करने को अपना आनन्द माना। अत: मेदेबा के साथ देश में ओम्री ने कब्ज़ा कर लिया था और अपने दिनों और अपने पुत्रों के आधे दिन आर्थात चालीस वर्ष तक यहां रहा, परन्तु मेरे दिनों में इसे बहाल किया। ...'' (जॉन डी. डेविस, *डेविस डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल* [नैशविल्ले, टैनिसी: दि वर्सिटी कंपनी, 1973], 530.) [2]अब ऐसा हुआ कि अपने घर के ऊपर से नीचे आते हुए अहज्याह गिर गया, और उसके बीमार होने की खबर एदोन के देवता मक्खी, यही इस देवता का नाम था, को उसका हाल जानने के लिए भेजी गई। परन्तु इब्रानियों के परमेश्वर ने एलिय्याह को दर्शन देकर उसे भेजे गए दूतों से मिलने की आज्ञा दी, और उनसे पूछा कि इस्राएलियों का अपना कोई देवता है या नहीं, कि उस बाहरी देवता से पता लगाने के लिए पूछने के लिए, आदमी भेजे कि वह तन्दरुस्त है या नहीं? (जोसेफस *एंटिकुइटीस ऑफ़ द ज्यूज़* 9.2.1)। [3]मसीह के समय तक यह देवता अर्थात बालजबूब शैतान का पर्याय बन गया था (मत्ती 12:24)। [4]ऐसा वस्त्र लगता है कि बाद के नबियों द्वारा फाड़ेका गया (जकर्याह 13:4; मत्ती 3:4) और उनकी सम्पत्ति के प्रतीक के रूप में माना जाता है। [5]एलिय्याह ने उस [अहज्याह द्वारा भेजे गए कप्तान] से कह ''तू परख कर सकता है कि मैं असली नबी हूं या नहीं 'मैं प्रार्थना करूंगा कि आकाश से आग गिरे और सिपाहियों सहित तुझे भस्म कर दे।' सो उसने प्रार्थना की और आग का एक बवण्डर गिरा और उसने उन सबके साथ उस कप्तान को नष्ट कर दिया।'' (जोसेफस *एंटिकुइटीस ऑफ़ द ज्यूज़* 9.2.1)।